मांगलिक अरिहंत बिज़्ब, आचार्य गुफा से प्राप्त अज़्बिका देवी के शीर्ष पर अरिहंत बिज़्ब, चमरधारिणी इन्द्राणी, पूर्व दिशा में एक किमी. दूर चंदेल बावडी के पास मंदिर अवशेषों में अमलसार तथा उज़र दिशा में आधा किमी. दूर टीले से प्राप्त आक्रांतहस्ती युक्त सिंह एवं अमलसार इस क्षेत्र की विशालता का विस्तार कई किमी. में होने के संकेत करते हैं। मिट्टी एवं पाषाण के मनके यहाँ विशाल नगर एवं उसमें मानव सज़्यता का संकेत करते हैं, जिनका अन्वेषण करने से न जाने कितने रहस्यों एवं तथ्यों का उद्घाटित होना शेष है।

अरनाथ मूलनायक जिन प्रतिमा में श्रीवत्स, चंवर, मीन, पार्श्वनाथ बिज़्ब में माल्याधर एवं मृदंग, शांतिनाथ बिज़्ब में युगलहिरण, आदि तीर्थंकर बिज़्ब में मांगलिक प्रतीक हैं। इनके अतिरिक्त स्वतंत्र प्रतीक भी नवागढ़ संग्रहालय में संगृहीत हैं- शिखर कलश, अमलसार, चक्र, त्रिछत्र कलश, गजयुगल, माल्याधर, मंदिर, शिखर आदि। पचास से अधिक खण्डित तीर्थंकर बिज़्बों में चमर, छत्र भामंडल, अशोक वृक्ष, मृदंग, श्रीवत्स, माल्याधर, गजयुगल, मंगलकलश, मांगलिक प्रतीक रूप में उपलज़्ध हैं। जिनशासन में मांगलिक प्रतीक सुखसमृद्धि धर्माचरण का संकेत करते हैं।

प्रागैतिहासिक पुरातात्त्विक विरासत का क्षेत्र नवागढ़

- शोध छात्रा: श्रीमती अर्पिता रंजन, आरा

भारतीय संस्कृति में सभी कलाओं एवं विधाओं का समावेश है। प्राचीन भारत की प्राकृतिक विशेषता है कि यहाँ ग्रीष्म, वर्षा, शीत के साथ हेमंत, शिशिर एवं वसंत छह ऋतुओं से पर्यावरण हराभरा एवं समृद्धशाली रहता है। इसीलिये भारत के प्रत्येक प्रदेश की लोक कला, लोक संस्कृति, लोक परज़्पराएँ, लोक संगीत, लोक साहित्य, लोक शिल्प से लोक जीवन विभिन्न आयामों से उत्प्रेरित सृजनशीलता से अपनी पहचान बनाकर भारतीय संस्कृति की विराटता, वैशिष्टय से सज़्पूर्ण विश्व को चमत्कृत करती है।

विशेषतया बुन्देलखण्ड में सर्वधर्म समभाव, साहित्य, कला, शिल्प स्थापत्य का उद्भव एवं विकास का चर्मोत्कर्ष, समृद्धि, खुशहाली से जनजीवन सदैव उन्नतशील रहा है। यहाँ के शासकों ने कृषि को मुज़्यता प्रदान कर हजारों कूप, बावड़ी तथा सैकड़ों विशाल सरोवरों से भूमि की उर्वरा शक्ति द्वारा समृद्धि विकास के साथ आत्मशांति-संतोष हेतु अध्यात्म एवं भक्ति के आयाम भी स्थापित किये हैं। जिनसे जीवन में स्थिरता एवं पारस्परिक मैत्रीभाव विकसित होता रहा है।

इसी समृद्धि एवं धन वैभव के आकर्षण ने राज्य विस्तार, सैन्यबल एवं शक्ति का दुरुपयोग, वैमनस्य- ईर्ष्या ने युद्ध की विभीषिका को भी उद्दीप्त किया है। धन-वैभव की चाहत, काम वासना तथा राज्यलिप्सा ने सैकड़ों समृद्धशाली विशाल नगरों को भी ध्वस्त कराया है। जिसके उदाहरण महोबा, लासपुर, सलक्षणपुर, मदनपुर, दुधही, चांदपुर, सैरोंन, नवागढ़, अजयगढ़ एवं खजुराहो हैं।

जहाँ अन्य क्षेत्रों में मूर्ति एवं स्थापत्य के साक्ष्य मिले हैं वहीं नवागढ़ में इनके साथ पुरावैशिष्ट्य विलक्षण है।10 कि.मी. विस्तार वाले नवागढ़ में किये गये अन्वेशणों ने इसकी सज़्पन्नता, आध्यात्मिक साधना केन्द्र, गुरुकुल परज़्परा, महानगरीय संस्कृति के साथ सर्वधर्म समभाव, कला-शिल्प की समृद्धि के रहस्य उद्घाटित किये हैं।

यहाँ लोवर पैलियोलिथिक (2 से 15 लाख वर्ष) मिडिल पैलियोलिथिक (35 हजार से 2 लाख (वर्ष), अपर पैलियोलिथिक (12 हजार से 35 हजार वर्ष) प्राचीन पाषाण कालीन सज़्यता, हजारों वर्ष प्राचीन प्राकृतिक साधना शैलाश्रय,

पैट्रोलिक कपमार्क, 10 हजार वर्ष, प्राचीन मैसोलेथिक रॉक आर्ट, रॉक पेंटिंग जिसमें जैन दर्शन के महज़्वपूर्ण गूढ़ रहस्य छिपे हैं। गले में पहनने वाले मिट्टी पाषाण के मनके से लेकर गुप्तकालीन एवं प्रतिहार कालीन मूर्ति शिल्प, चंदेल कालीन बावडी, स्थापत्य जिन मंदिरों के समूह जिनमें संवत् 1123, 1188, 1195, 1202, 1203, 1490, 1548, 1586, 1885 से आज तक की मूर्तियाँ अन्वेषित की गयी हैं।

यह पुराताज़्विक सज़्पदा जैनधर्म की प्राचीनता उद्भव एवं विकास के सशक्त साक्ष्य नवागढ़ को प्रागैतिहासिक धरोहर का विशाल क्षेत्र घोषित करते हैं।

ऐसे प्रागैतिहासिक पुरा सज़्पन्न क्षेत्र के टीलों में न जाने कितने रहस्य संरक्षित हैं, जो भारतीय संस्कृति की अमूल्य विरासत को अपने अंदर समेटे हुये है। डॉ. मारुतिनंदन प्रसाद तिवारी, डॉ. गिरिराज कुमार जैसे पुरातज़्वविद जैन दर्शन के इन नवागढ़ के साक्ष्यों का अन्वेषण करके गौरवान्वित हैं। उनका कहना है हमने कई क्षेत्रों में कार्य किया परन्तु नवागढ़ जैसी पुरा सज़्पदा अत्यंत विलक्षण एवं विशिष्ट है।

मुझे ऐसी साइट पर कार्य करने का सौभाग्य ब्र, जयकुमार जी निशांत, श्री संजय मंजुल सर एवं मेरे निर्देशक डॉ. प्रकाशराय के सद्प्रयास एवं आशीर्वाद का फल है। शासन प्रशासन से अनुरोध है ऐसे क्षेत्रों में अन्वेषण कर भारतीय संस्कृति के विशेष आयाम स्थापित करें।

सहायक अधीक्षण, पुरातज़्वविद संस्कृत अभिलेख, पं. दीनदयाल उपाध्याय पुरातज़्व संस्थान, ग्रेटर नोयड़ा।

नवागढ़ मूर्तियों का कला वैशिष्टय

शोध छात्रा: श्रीमती अर्पिता रंजन, आरा

जैनधर्म प्राकृतिक धर्म है, इसका आदि अंत नहीं है, इसका सिद्धांत है ''वत्थु सहावो धज़्मो'' वस्तु का स्वभाव ही धर्म है, जैसे अग्नि में उष्णता, गन्ने की मिठास, नीम का कड़वापन उनका स्वभाव है, यही उसका धर्म है जो हमेशा रहेगा। उसी तरह जीव आत्मा का स्वभाव ज्ञान एवं चेतना है।

जैन सिद्धान्तानुसार प्रत्येक आत्मा स्वतंत्र है, पेड़-पौधे से लेकर चीटी, छिपकली, बन्दर, मनुष्य सभी जीव सत्कर्म करके आत्मोन्नति करते हुए संसार के जन्म-मरण एवं दुखों से छुटकारा पा सकते हैं।

विलक्षण धर्म- जैनधर्म में भक्ति के लिये मूर्तियों की प्राणप्रतिष्ठा करके उनकी स्थापना की जाती है, मूर्ति के माध्यम से उस मूर्ति में जिनके गुणों का गुणारोपण किया गया है उनकी पूजा की जाती है अर्थात् मूर्ति के साथ मूर्तिमान की पूजा की जाती है। जैसे जिस मूर्ति में ऋषभदेव के गुणों की स्थापना की जाती है उससे ऋषभदेव की आराधना की जायेगी तथा जिसमें महावीर के गुणों की स्थापना की गई है, उससे महावीर की आराधना की जायेगी।

जैनधर्म में भगवान् (केवली) अनंत हो सकते हैं परन्तु तीर्थंकर चौबीस ही होते हैं। काल क्रमानुसार प्रत्येक अवसर्पिणी एवं उत्सर्पिणी में 24-24 ही तीर्थंकर होते हैं। वर्तमान काल में तीर्थंकरों का सद्भाव न होने के कारण उनकी प्रतिकृति (मूर्ति) में उनके गुणों का आरोपण करके पूजा की जाती है।

कला वैशिष्ट्य- तीर्थंकरों के जन्मस्थान, शरीर, दीक्षा स्थान, आयु एवं निर्वाण में भिन्नता होते हुए भी उनके गुणों में भिन्नता नहीं होती- सभी में 1008 शुभलक्षण एवं उन पर आधारित नाम एक समान होते हैं। उसका वैशिष्ट्य प्रागैतिहासिक अतिशय क्षेत्र नवागढ़ में संगृहीत मूर्तियों में मिलता है। मुझे कई जैन तीर्थों पर अन्वेषण का सौभाग्य मिला, पर जो वैशिष्ट्य नवागढ़ में मिला अन्य कहीं नहीं मिला।

जब क्षेत्र निर्देशक ब्र. जयकुमार 'निशांत' जी पहली बार लाल किला स्थित कार्यालय में आये और आपने डॉ संजय मंजुल डायरेज़्टर एवं इंजी. पी. सी. जैन को नवागढ़ के फोल्डर एवं पुरा सज़्पदा के चित्र दिखाए, तो मेरी जिज्ञासा बढ़ी। श्री निशांत